

## ज्ञानशाला का प्रोत्साहन कार्यक्रम दुख का स्रोत है कामना – आचार्य महाप्रज्ञ

—तुलसीराम चौरड़िया (मीडिया संयोजक)—

श्रीडूंगरगढ़ 21 मार्च : राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि दुख का स्रोत कामना है। जब कुछ प्राप्त करने की कामना कर ली जाती है और वह प्राप्त नहीं होती है तो दुख पैदा हो जाता है। कामना जितनी प्रबल होगी उतना ही दुख ज्यादा होगा। आज विश्व में जितनी भी बीमारियां हैं वे कामना की अति के कारण ज्यादा खतरनाक बनती जा रही हैं। कामना के कारण तनाव बढ़ता है और तनाव से हार्ट, हाईबलडप्रेसर, सुगर आदि बीमारियां हो जाती हैं। जिस को सबसे ज्यादा धनी और शक्तिशाली राष्ट्र माना जाता है उसी राष्ट्र में डिप्रेशन से ग्रस्त लोग ज्यादा रहते हैं।

उन्होंने तेरापंथ भवन (उपरलो) में संबोधि गंथ पर प्रवचन में भगवान महावीर से मुनि मेघकुमार द्वारा दुख के स्रोत के विषय में पूछे गये प्रश्न के उत्तर में महावीर के सूत्र को प्रस्तुत करते हुए कहा कि शारीरिक और मानसिक दो प्रकार की बीमारियां होती हैं। चाहे, कामना के कारण मानसिक बीमारियां बढ़ती हैं और जब मन स्वस्थ नहीं रहता है तो शरीर पर भी असर होता है। उन्होंने विजय पाने के लिए वीतरागता की साधना को जरूरी बताते हुए कहा कि सब राष्ट्र का संचालन अपने अपने अधिकृत व्यक्ति करते हैं, कोई भी संपूर्ण विश्व पर शासन नहीं करता परन्तु राग-द्वेष ऐसे हैं जो पूरे विश्व पर एकक्षेत्र शासन करते हैं और इनको कोई चुनौती देने वाला कोई नहीं है। एक वीतरागता में ही ऐसी शक्ति है जो इनको चुनौती दे सकता है। जितनी वीतरागता बढ़ेगी उतनी ही कामना कम होगी और दुख नष्ट होता जायेगा।

युवाचार्य महाश्रमण ने ज्ञानशाला प्रोत्साहन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि बच्चों के सामने एक और स्कूली अध्ययन है तो दूसरी और आध्यात्म एवं संस्कार निर्माण के उपक्रम में भाग लेना भी है। ज्ञानशाला के माध्यम से बालपीढ़ी में सदसंस्कार भर कर भविष्य को सुन्दर बनाने का महत्वपूर्ण कार्य होता है। जब बच्चपन में संस्कार निर्माण हो जाता है तो जीवन सुन्दर बन जाता है, अन्यथा उसमें उबड़ खाबड़ रह जाती है। उन्होंने ज्ञानशाला के संचालन में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ महिलामंडल के सहयोग का उल्लेख करते हुए कहा कि महिलाओं में बच्चों को संभालने की एक कला होती है। उनकी वात्सल्य भरी नजरे बच्चों को विशेषरूप से प्रेरित करती हैं। ज्ञानशाला में प्रशिक्षण कार्य महिलामंडल ने संभाल लिया है जिससे हमारे साधु-साधवियां कुछ निवृत्त हो गये हैं। युवाचार्य प्रवर ने ज्ञानशाला के संचालन में लगे सभी कार्यकर्ताओं की सराहना करते हुए बच्चों को संस्कारित करना जरूरी बताया।

कार्यक्रम में तेरापंथ महिलामंडल की अध्यक्षा झिणकार देवी बोथरा ने विचार रखे। ज्ञानशाला की ज्ञानार्थी अदिती गोलछा ने अपने अनुभव सुनाये। अक्षिता पुगलिया ने अपनी बाल सुलभ बोली “मैं ज्ञानशाला जाती हूँ इसलिए सबसे अच्छी हूँ” पद्यों को प्रस्तुत कर सबकी वाहवाही लूटी। साक्षी दुगड़, प्रतिभा सेठिया, रजत झाबक, आनन्द झाबक, तमन्ना झाबक, यश झाबक, कृति झाबक, प्रियंका पुगलिया, अभिक्षा, मोहित डागा, महिमा दुगड़, प्रिती पुगलिया, वीणा भंसाली, विवेक पुगलिया, पीयूष पुगलिया, मयंक सिंघी, मधु सेठिया, आदित्य भंसाली ने लघु संवाद और नमस्कार महामंत्र मुद्राओं की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के संचालन में सहयोगी महाप्रज्ञ जन कल्याण केन्द्र के पदाधिकारियों एवं अन्य सहयोगियों का तेरापंथ महिला मंडल और तेरापंथ युवक परिषद् के पदाधिकारियों एवं ज्ञानशाला के संयोजक प्रदीप झाबक व उपसंयोजक जगदीशराय मालू ने साहित्य भेंट कर सम्मान किया। इस अवसर पर विशिष्ट ज्ञानार्थियों को भी पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमति मधुझाबक ने किया।

तुलसीराम चौरड़िया

मीडिया संयोजक/सहसंयोजक